



सांध्य दैनिक 4PM



जब तक व्यक्ति के मन में काम, गुस्सा, अहंकार, और लालच भरे हुए होते हैं तब तक एक ज्ञानी और मूर्ख व्यक्ति में कोई भेद नहीं रहता, दोनों एक जैसे ही हो जाते हैं।
-तुलसीदास

मूल्य
₹ 3/-

जिद...सच की



www.4pm.co.in



www.facebook.com/4pmnewsnetwork



@Editor_SanjayS



4pm NEWS NETWORK

● वर्ष: 12 ● अंक 241 पृष्ठ: 8 ● लखनऊ, शुक्रवार 9 अक्टूबर, 2026

भारत और वेस्टइंडीज के बीच दूसरा... 7 यूपी विधान सभा चुनाव की... 3 भाजपा को अयोध्या से नहीं से... 2

अमेद दुर्ग में बदली दिल्ली

दिल्ली में प्रदर्शन होने वाला है या दुश्मन देश चढ़ाई करने वाला है

विपक्ष का निर्णायक आंदोलन कल

तैयारी दोनों तरफ से सरकार की कोशिश विफल हो आंदोलन

10 डिटेन्शन सेंटर और 40 मेट्रो स्टेशन होंगे बंद

23

हजार पुलिस के जवान तैनात



राजधानी के रास्ते बंद किए जा सकते हैं लोकतंत्र के सवाल नहीं

CRPF की 221 कंपनियां उपलब्ध

- » विपक्षी करो-मरो की रणनीति के साथ मैदान में
- » दिल्ली वाले एप बेस्ड टैक्सी भी नहीं कर सकेंगे बुक इस पर भी पाबंदी
- » ग्रह मंत्रालय ने 8 अक्टूबर से 12 अक्टूबर तक के लिए सीआरपीएफ की 221 कंपनियां उपलब्ध कराई।

□□□ 4पीएम न्यूज नेटवर्क

नई दिल्ली। दिल्ली में प्रदर्शन होने वाला है या दुश्मन देश चढ़ाई करने वाला है? 23 हजार जवानों की तैनाती, 10 डिटेन्शन सेंटर 40 मेट्रो स्टेशनों पर ताला लगाने की तैयारी और राजधानी के रास्तों पर पहरेदारी। सीजेपी और विपक्षी राजनीतिक पार्टियों के प्रदर्शन से पहले दिल्ली में सुरक्षा का जो चक्रव्यूह रचा जा रहा है वह एक सीधा सवाल सत्ता के सामने खड़ा करता है कि जब सरकार को अपने लोकतंत्र पर भरोसा है तो उसे जनता की आवाज से इतना डर क्यों लग रहा है।

क्या अब विरोध करने वालों को सुनने के बजाय उन्हें राजधानी की दहलीज तक पहुंचने से रोकना ही नया लोकतांत्रिक मॉडल है। किसान आंदोलन



याद है दिल्ली की सीमाओं पर कीलें गाड़ी गयी सड़कों पर बैरिकेडिंग की दीवारें खड़ी की गयी आंसू गैस के गोले छोड़े गए। किसानों को रोकने के लिए रास्तों को युद्धभूमि जैसा बना दिया गया।

- » दिल्ली आंदोलन के लिए जम्मू कश्मीर, छत्तीसगढ़ और पश्चिम बंगाल से सरकार ने बुलाये सीआरपीएफ के जवान

लेकिन किसान पीछे नहीं हटे। महीनों तक डटे रहे और आखिरकार सरकार को तीनों कृषि कानून वापस लेने पड़े। अब फिर राजधानी के चारों ओर पहरे का पहाड़ खड़ा करने की तैयारी है। इस बार मुद्दा जंतर मंतर का आंदोलन है। सवाल यह है कि क्या सरकार विरोध की आवाज को सुरक्षा का खतरा बताकर लोकतांत्रिक असहमति पर ताला लगाना चाहती है। इतिहास की विडंबना देखिए 1857 में हुकूमत बगावत से घबराई थी 1947 में उसी देश ने आजादी हासिल की। आजाद भारत में सत्ता के सामने सबसे बड़ा इम्तिहान यही है कि वह असहमति को दुश्मनी समझती है या लोकतंत्र की ताकत। क्योंकि बैरिकेडिंग रास्ता रोक सकती है मेट्रो बंद कर सकती है लोगों को हिरासत में ले सकती है लेकिन विचारों की आवाजाही पर पहरा लगाना इतना आसान नहीं होता।

संबंधित खबरें पेज 8 पर

10

अक्टूबर सरकार के लिए अहम होगा

1857

में हुकूमत बगावत से घबराई थी

राहुल, अखिलेश उद्व-राज ठाकरे ध्रुव राठी प्रकाश राज, सीजेपी नेता, समेत सभी तैयार



कांग्रेस सांसद इमरान मसूद ने कहा, ज्ञानेश कुमार हवा में उड़ जाएंगे, ये जन आंदोलन बन चुका है, अब हर आदमी सवाल पूछने लगा है। आप 13 करोड़ लोगों के वोट काट दोगे, देश सवाल नहीं करेगा? यह प्रदर्शन भाजपा को उखाड़ फेंक देगा। हम लोकतंत्र के अधिकारों को खत्म नहीं होने देंगे।

इमरान मसूद, कांग्रेस सांसद

भाजपा को अयोध्या विस सीट के लिए नहीं मिल रहा उम्मीदवार : अखिलेश यादव

» सपा प्रमुख बोले- मुख्यमंत्री योगी लड़े यहां से चुनाव

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

अयोध्या। सपा प्रमुख अखिलेश यादव का भाजपा और सीएम योगी पर तीखे हमले जारी हैं। अयोध्या पहुंचे सपा प्रमुख अखिलेश यादव ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को अयोध्या से चुनाव लड़ने की खुली चुनौती दी। उन्होंने दावा किया कि बीजेपी को यहां से कोई उम्मीदवार नहीं मिल रहा है। अखिलेश ने कहा कि समाजवादी पार्टी की सरकार बनने पर अयोध्या का अंतरराष्ट्रीय विकास होगा और किसी के मकान-दुकान नहीं उजाड़े जाएंगे।

समाजवादी पार्टी के प्रमुख अखिलेश यादव एक धार्मिक कार्यक्रम के लिए अयोध्या पहुंचे जिससे राज्य में होने वाले चुनावों से पहले चर्चाएं शुरू हो गई हैं। हालांकि वे राम मंदिर नहीं गए, लेकिन उनका वहां जाना बीजेपी की आलोचनाओं और हालिया विवादों के बीच लोगों का भरोसा फिर से जीतने की एक राजनीतिक रणनीति का संकेत है। अयोध्या में सपा प्रत्याशी पवन पांडेय की कथा में शामिल होने पहुंचे अखिलेश



सपा सरकार बनेगी तो अंतरराष्ट्रीय स्तर पर अयोध्या की पहचान बनाएंगे

सपा नेता ने कहा कि जो प्रेम, दया और अपनापन नहीं रखता उसका अंत कंस की तरह होता है। भागवत कथा सदियों से चलती चली आ रही है और सदियों तक चलेगी। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में जब समाजवादी सरकार बनेगी तो अंतरराष्ट्रीय

यादव ने मुख्यमंत्री योगी आदित्यनाथ को अयोध्या से चुनाव लड़ने की चुनौती दी। अखिलेश ने कहा कि अगर बड़े बड़े दावे करने वाले मुख्यमंत्री इतना ही आश्वस्त हैं तो खुद अयोध्या से चुनाव लड़कर दिखाएं। उन्होंने दावा किया कि बीजेपी

को आज अयोध्या से चुनाव लड़ने के लिए कोई उम्मीदवार ही नहीं मिल रहा है। उन्होंने कहा कि हमारे देश की संस्कृति इतनी महान है कि हम बचपन से ही रामायण और महाभारत सुनते रहते हैं। भागवत कथा के कार्यक्रम में हम

स्तर पर कैसे अयोध्या की पहचान हो उसके लिए विकास को हम गति देने का काम करेंगे। उन्होंने कहा कि आने वाले समय में समाजवादी सरकार होगी तो न आपके साथ भेदभाव होगा न आपके दुकान मकान उजाड़ा जाएगा।

अहंकार, सत्ता, भेदभाव जाति, ऊंच-नीच, छुआछूत का वंदन आज हमारे सामने है

समाजवादी पार्टी के प्रमुख ने भी कहा कि अहंकार, सत्ता, भेदभाव, जाति, ऊंच-नीच, छुआछूत का वंदन आज हमारे सामने है। हमारे लिए तो जो प्रभु श्री राम हैं वही प्रभु श्री कृष्ण हैं और जो श्री कृष्ण हैं वही श्री राम हैं। कथा मन और मनोबल को बढ़ाने का काम करती है। भागवत कथा हमें ऐसा समाज बनाने की प्रेरणा देती है जिसमें भेदभाव का कोई स्थान नहीं है। उन्होंने कहा कि जो सुदर्शन चक्र है वो सज्जनों की रक्षा के लिए है, सज्जनों को डराने के लिए नहीं है। राज छल से नहीं, प्रेम से मिलता है।

भाजपा सांसद ने पाकिस्तान के फाइटर जेट की तस्वीर पोस्ट की, मचा बवाल



4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

बुलंदशहर। वायुसेना दिवस पर भाजपा के राष्ट्रीय मंत्री व सांसद डॉ. भोला सिंह ने फेसबुक पर शुभकामना की पोस्ट की थी। इस पोस्ट पर कांग्रेस के कोऑर्डिनेटर व अखिल भारतीय क्षेत्रीय महासभा के मंडल अध्यक्ष ज्ञानेंद्र राघव ने सवाल उठाए हैं।

उनका आरोप है कि सांसद ने पोस्ट में जिस फाइटर जेट की तस्वीर पोस्ट की है, उस पर पाकिस्तान का झंडा है। इससे साफ है कि पोस्ट में पाकिस्तान के फाइटर जेट की तस्वीर लगाई गई है। कांग्रेस नेता ने भाजपा सरकार से इस मामले में कार्रवाई करने की मांग उठाई है। वहीं सांसद ने कहा कि उनके फेसबुक पर उनकी टीम से गलती से फोटो पोस्ट हो गया। जानकारी होने पर उसे तुरंत हटा दिया गया। टीम को एहतियात बरतने की चेतावनी दी है।

ज्ञानेश कुमार के इस्तीफे तक जारी रहेगा आंदोलन : मोना

» कांग्रेस प्रदेश अध्यक्ष बोलीं लोकतंत्र खतरे में है

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। कांग्रेस की उप इकाई की अध्यक्ष आराधना मिश्रा मोना के नेतृत्व में कांग्रेस कार्यकर्ताओं ने लोकसभा में नेता प्रतिपक्ष राहुल गांधी और कांग्रेस महासचिव प्रियंका गांधी वाद्रा के साथ पुलिस उत्पीड़न के विरोध और मुख्य निर्वाचन आयुक्त (सीईसी) के इस्तीफे की मांग को लेकर काला दिवस मनाया और शांति मार्च निकाला। इस मौके पर आराधना ने कहा कि जब तक मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार इस्तीफा नहीं देते हैं, तब तक यह आंदोलन जारी रहेगा।

कांग्रेस के बयान के अनुसार आराधना मिश्रा ने इस मौके पर कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए कहा कि यह आन्दोलन तब तक चलता रहेगा जब तक मुख्य निर्वाचन आयुक्त ज्ञानेश कुमार इस्तीफा नहीं दे देते हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि इस देश का संविधान और लोकतंत्र खतरे में है। कांग्रेस के एक बयान के अनुसार अखिल भारतीय कांग्रेस कमेटी के निर्देश पर एवं प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष आराधना के आह्वान पर राजधानी लखनऊ में शांति मार्च निकालकर विरोध प्रदर्शन किया गया। इसमें कहा गया है कि पूरे प्रदेश में जिला एवं



प्रखंड स्तर पर कांग्रेस की जिला एवं शहर इकाइयों के नेतृत्व में विरोध प्रदर्शन का आयोजन किया गया। आराधना के नेतृत्व में ज्ञानेश कुमार इस्तीफा दो के नारे लगाते हुए सैकड़ों की संख्या में कांग्रेस कार्यकर्ताओं द्वारा प्रदेश कांग्रेस मुख्यालय से शांति मार्च निकाला गया। माल एवेन्यू चौराहे से आगे

बढ़ने पर लालबहादुर शास्त्री मार्ग से पहले सुन्नी वक्फ बोर्ड के पास भारी संख्या में पुलिस बल द्वारा बैरिकेडिंग लगाकर कांग्रेस कार्यकर्ताओं को रोका गया।

इस दौरान आगे बढ़ने को लेकर कांग्रेस समर्थकों और पुलिस बल में धक्का-मुक्की हुई और प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष कार्यकर्ताओं के साथ सड़क पर बैठ गयीं। बयान के मुताबिक, इसके बाद प्रदेश कांग्रेस अध्यक्ष सहित अन्य कार्यकर्ताओं और समर्थकों को पुलिस लाइन ले जाया गया।

कांशीराम ने बहुजन समाज को शोषित से शासक बनाया : मायावती

» कांशीराम के परिनिर्वाण दिवस पर लखनऊ में रैली आयोजित

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) की राष्ट्रीय अध्यक्ष मायावती ने पार्टी के संस्थापक कांशीराम के परिनिर्वाण दिवस पर उन्हें भावभीनी श्रद्धांजलि अर्पित की है। उन्होंने कहा कि कांशीराम ने देश में सदियों से पिछड़े और शोषित बहुजन समाज को वोट की ताकत के जरिए सत्ता की मास्टर चाबी सौंपने और उन्हें शासक वर्ग बनाने का ऐतिहासिक कार्य किया।

मायावती ने अपने संदेश में कहा कि डॉ. भीमराव आंबेडकर के आत्म-सम्मान और स्वाभिमान के आंदोलन को आगे बढ़ाने के लिए कांशीराम ने अपना संपूर्ण जीवन समर्पित कर दिया। उनके इसी मिशनरी संकल्प का परिणाम था कि उत्तर प्रदेश जैसे बड़े राज्य में बसपा की चार बार सरकार



बनी। पूर्व मुख्यमंत्री ने कहा कि बसपा सरकारों के दौरान सामाजिक परिवर्तन और आर्थिक मुक्ति के ऐतिहासिक कार्य किए गए। इस दौरान महात्मा ज्योतिबा फुले, श्री नारायण गुरु, छत्रपति शाहूजी महाराज और डॉ. बी.आर. आंबेडकर जैसे महान संतों व महापुरुषों के समतावादी विचारों को धरातल पर उतारकर संविधान की पवित्र मंशा को पूरा किया गया। मायावती ने यह भी रेखांकित किया कि उत्तर प्रदेश में बसपा शासन के दौरान अपराध नियंत्रण और कानून व्यवस्था के क्षेत्र में कानून द्वारा कानून का राज स्थापित किया गया। जनहित और विकास के कार्यों के जरिए एक पारदर्शी और जन-कल्याणकारी सरकार देना ही कांशीराम को पार्टी की ओर से सच्ची श्रद्धांजलि है। परिनिर्वाण दिवस के अवसर पर बसपा समर्थकों और कार्यकर्ताओं ने भी कांशीराम के अधूरे मिशन को पूरा करने का संकल्प दोहराया। बसपा संस्थापक कांशीराम के शुक्रवार को 20वें परिनिर्वाण दिवस पर बसपा सुप्रीमो मायावती मॉल एवेन्यू स्थित केंद्रीय कैंप कार्यालय में श्रद्धांजलि अर्पित करेंगी।



आपसी समन्वय के साथ बूथ स्तर पर जुटें कार्यकर्ता : पाल

4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

लखनऊ। समाजवादी पार्टी के प्रदेश अध्यक्ष श्यामलाल पाल के जनपद गाजीपुर पहुंचने पर डाक बंगले में पार्टी कार्यकर्ताओं और पदाधिकारियों ने उनका जोरदार स्वागत एवं अभिनंदन किया। इस दौरान पार्टी नेताओं ने संगठन को मजबूत करने और आगामी विधानसभा चुनाव की तैयारियों को लेकर प्रदेश अध्यक्ष से सवाद किया।

सपा महिला सभा की राष्ट्रीय महासचिव पुनीता सिंह खुशबू ने प्रदेश अध्यक्ष श्यामलाल पाल को प्रतिभा एवं अंगवस्त्र भेंटकर उनका स्वागत किया। उन्होंने पार्टी की ओर से प्रदेश अध्यक्ष का अभिनंदन करते हुए संगठन को मजबूत करने में महिला कार्यकर्ताओं की

» सपा प्रदेशाध्यक्ष का गाजीपुर में जोरदार स्वागत

भूमिका पर भी जोर दिया। पुनीता सिंह खुशबू की मौजूदगी और स्वागत कार्यक्रम में उनकी सक्रिय भागीदारी चर्चा का विषय रही। इस अवसर पर प्रदेश अध्यक्ष श्यामलाल पाल ने कार्यकर्ताओं को संबोधित करते हुए आगामी 2027 के विधानसभा चुनाव की तैयारियों में अभी से जुट जाने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि पार्टी कार्यकर्ता आपसी समन्वय के साथ संगठन को बूथ स्तर तक मजबूत करें और पार्टी की नीतियों एवं कार्यक्रमों को जनता तक पहुंचाने का काम करें। उन्होंने कार्यकर्ताओं से एकजुट होकर संगठन के लिए

पूरी तत्परता से काम करने का संदेश दिया। प्रदेश अध्यक्ष के आगमन को लेकर पार्टी कार्यकर्ताओं में उत्साह देखने को मिला। कार्यकर्ताओं ने उनका स्वागत करते हुए संगठनात्मक गतिविधियों को और तेज करने तथा आगामी चुनाव को लेकर जमीनी स्तर पर तैयारी शुरू करने की बात कही। स्वागत कार्यक्रम में सपा जिलाध्यक्ष गोपाल यादव, विधायक जय किशन साहू, पूर्व जिलाध्यक्ष रामधारी यादव, पूर्व सांसद जगदीश कुशवाहा, पूर्व विधायक खुशींद अहमद, सपा नेता डॉ. समीर सिंह, यादव महासभा जिलाध्यक्ष सुजीत साइकिल, महासचिव कन्हैया विश्वकर्मा, रीना यादव सहित पार्टी के अन्य पदाधिकारी एवं कार्यकर्ता मौजूद रहे।

यूपी विधान सभा चुनाव की आहट

गठबंधन में ही चुनाव लड़ेंगे सपा और कांग्रेस

- » बढ़ने लगी है सियासी दलों में छटपटाहट
- » भाजपा-कांग्रेस व बसपा की तैयारी
- » राहुल और अखिलेश मिलकर करेंगे सीटों पर फैसला

□□□ 4पीएम न्यूज नेटवर्क

लखनऊ। जैसे-जैसे यूपी विधान सभा चुनाव की आहट सुनाई दे रही है सियासी दलों की तैयारी में सरगमी भी तेज होती जा रही है। चंदा चोरी, वोट चोरी को धार देने में पूरा विपक्ष जुट गया है। इंडिया गठबंधन भाजपा की एनडीए सरकार को हर मोर्चे पर घेरने के लिए पूरी विसात बिछा चुकी है। अब कांग्रेस व सपा में गठबंधन को लेकर गंभीरता से विचार शुरू हो गया। कांग्रेस ने अपना प्रदेश अध्यक्ष भी बदल दिया है। वह इसबार अपनी ताकत तो लगा ही रही है पर अब सपा व सहयोगियों के साथ भी मजबूती से जुड़ने की कोशिश में है।

उधर भाजपा ने भी पूरी ताकत झोंक दी है। केंद्रीय नेतृत्व ने खुद ही मोर्चा संभाल लिया है। ऐसर खबरें आ रही हैं कि विधानसभा का चुनाव सपा और कांग्रेस मिलकर लड़ेंगे। सपा और कांग्रेस दोनों के ही रणनीतिकारों का मानना है कि समय रहते सीटों का बंटवारा होने से प्रत्याशियों को अपने-अपने क्षेत्रों में तैयारी का पर्याप्त समय मिल सकेगा। उत्तर प्रदेश में आगामी चुनावों के मद्देनजर इंडिया गठबंधन ने अपनी तैयारियां तेज कर दी हैं। गठबंधन के दो प्रमुख घटकों— समाजवादी पार्टी (सपा) और कांग्रेस के बीच जल्द ही सीटों के बंटवारे को लेकर औपचारिक बातचीत शुरू होने जा रही है। सूत्रों के मुताबिक, दोनों ही दल इस वार्ता प्रक्रिया को जल्द से जल्द पूरा कर चुनावी मैदान में साझा रणनीति के साथ उतरना चाहते हैं। इसके लिए दोनों पार्टियों की ओर से अधिकृत पदाधिकारियों को नामित किया जाएगा, जो प्राथमिक स्तर पर सीटों के समीकरणों, मजबूत दावेदारी और क्षेत्रीय जनाधार पर मंथन करेंगे। वहीं बसपा ने भी अपने कीलकांटे सही करने शुरू कर दिए हैं। दोनों गठबंधनों के सहयोगी दल भी कमर कस रहे हैं।



अखिलेश के राजनीतिक संदेश पर रहेंगी लोगों की निगाहें

अखिलेश का कार्यक्रम इसलिए भी अहम है, क्योंकि भागवत कथा का आयोजन अयोध्या विधानसभा क्षेत्र से सपा के घोषित प्रत्याशी पवन पांडेय के यहां हो

रहा है। ऐसे में चुनाव से पहले सपा प्रमुख का उनके आवास पर पहुंचना संगठन और कार्यकर्ताओं के बीच संदेश देने के साथ अयोध्या सीट पर पार्टी की सक्रियता

बढ़ाने की कवायद के तौर पर भी देखा जा रहा है। धार्मिक आयोजन के मंच से अखिलेश किस तरह का राजनीतिक संदेश देते हैं, इस पर भी निगाहें रहेंगी।

प्राथमिक स्तर पर राज्यस्तरीय नेताओं और अधिकृत पदाधिकारियों के बीच दौर-दर-दौर वार्ता की तैयारी

प्राथमिक स्तर पर राज्यस्तरीय नेताओं और अधिकृत पदाधिकारियों के बीच दौर-दर-दौर वार्ता होगी, जिसमें प्रत्येक सीट के गुणा-गणित का विश्लेषण किया जाएगा। इसके बाद सभी प्रस्तावों और सहमति-असहमति के बिंदुओं को केंद्रीय नेतृत्व के समक्ष रखा जाएगा। सीट बंटवारे के इस पूरे फॉर्मूले पर अंतिम मुहर कांग्रेस अध्यक्ष मल्लिकार्जुन खरगे, पूर्व अध्यक्ष राहुल गांधी और सपा प्रमुख अखिलेश यादव मिलकर लगाएंगे। सपा और कांग्रेस दोनों के ही रणनीतिकारों का मानना है कि समय रहते सीटों का बंटवारा होने से प्रत्याशियों को अपने-अपने क्षेत्रों में तैयारी का पर्याप्त समय मिल

सकेगा। इसके अलावा कार्यकर्ताओं के बीच भी किसी तरह का भ्रम नहीं

रहेगा और संयुक्त प्रचार अभियान को गति दी जा सकेगी। जल्द ही

दोनों दलों की संयुक्त बैठक का शेड्यूल जारी होने की संभावना है।

भाजपा ने कसा तंज

भाजपा प्रवक्ता राकेश त्रिपाठी ने कहा था कि अखिलेश यादव को अयोध्या कभी अच्छी नहीं लगेगी। अयोध्या में 50 हजार करोड़ रुपये से अधिक की विकास परियोजनाएं चल रही हैं, जिन्हें देखकर वह शायद यह सोचें कि मुख्यमंत्री रहते हुए उन्होंने अयोध्या को क्यों भुला दिया था। यदि अखिलेश अब अयोध्या आकर क्षमा याचना कर लें तो पुराने पापों के लिए कुछ माफ़ी मिल सकती है। इससे पहले उप मुख्यमंत्री ब्रजेश पाठक ने भी अखिलेश के अयोध्या



दौर पर तीखा हमला बोला था। उन्होंने आरोप लगाया था कि अखिलेश व्यक्तिगत एजेंडे के तहत

अयोध्या आ रहे हैं। भाजपा जिलाध्यक्ष राधेश्याम त्यागी ने कहा कि पीएम नरेंद्र मोदी व सीएम योगी आदित्यनाथ के राज में सनातन का जो वेग है इसे सनातन विरोधी लोग सह नहीं पा रहे हैं। कल जो रोजा झूठार कर आमीन-आमीन करते थे, आज ये राधे-राधे करने को मजबूर हुए हैं। ये सनातन विरोधी हैं, अयोध्या में आकर रामलला के दर्शन नहीं करेंगे, ये इनका स्वभाव है। इनके पूर्वजों ने रामभक्तों पर गोली चलवाई थी, ये रामलला के दर्शन क्यों करेंगे।

अखिलेश यादव अयोध्या पहुंचे

यूपी विधानसभा चुनाव 2027 की आहट के बीच सपा प्रमुख अखिलेश यादव बृहस्पतिवार को अयोध्या पहुंचे। यहां अयोध्या धाम से करीब 12 किमी दूर पूर्व मंत्री तेजनारायण पांडेय उर्फ पवन पांडेय के आवास पर आयोजित श्रीमद्भागवत कथा में वह शामिल होंगे। करीब एक घंटे के प्रस्तावित प्रवास में अखिलेश धार्मिक आयोजन में सहभागिता करेंगे। हालांकि उनके कार्यक्रम में फिलहाल राम मंदिर दर्शन शामिल नहीं है। अयोध्या में उनकी मौजूदगी धार्मिक आयोजन तक सीमित रहेगी या चुनावी संदेश भी देगी, इसे लेकर सियासी हलचल तेज हो

गई है। अखिलेश का अयोध्या दौरा ऐसे समय हो रहा है, जब समाजवादी पार्टी और कांग्रेस समेत विपक्षी दल 'वोट चोरी' के मुद्दे पर भाजपा के खिलाफ आंदोलन कर रहे हैं। अयोध्या में भी सपा-कांग्रेस लगातार प्रदर्शन और राजनीतिक गतिविधियां कर रही हैं। ऐसे में सपा प्रमुख का अयोध्या आना पार्टी की चुनावी तैयारियों के लिहाज से महत्वपूर्ण माना जा रहा है। खास बात यह है कि अखिलेश अयोध्या आएंगे, लेकिन फिलहाल राम मंदिर जाने का कार्यक्रम नहीं है। भाजपा ने इसी को मुद्दा बनाकर सपा प्रमुख पर हमला तेज कर दिया है।

नवंबर में राम मंदिर और हनुमानगढ़ी में दर्शन करेंगे

सपा जिलाध्यक्ष जय सिंह राणा ने कहा कि अखिलेश यादव का अयोध्या दौरा धार्मिक आयोजन में शामिल होने के लिए है। राम लला के दर्शन से किसी तरह का परहेज नहीं है। पार्टी के अनुसार नवंबर में अखिलेश यादव राम मंदिर और हनुमानगढ़ी में दर्शन करेंगे। अयोध्या किसी एक दल की जागीर नहीं है। राम मंदिर जाने या न जाने को राजनीतिक मुद्दा बनाने के बजाय भाजपा को विकास के हर दौर का हिसाब देना चाहिए।

इमानदारी से होंगे चुनाव तो इंडिया गठबंधन की जीत : शिवपाल

समाजवादी पार्टी (सपा) के राष्ट्रीय महासचिव एवं जसवंत नगर के विधायक शिवपाल सिंह यादव ने दावा किया कि भारतीय जनता पार्टी (भाजपा) सरकार जाने वाली है। उन्होंने ये भी कहा कि 2027 के उत्तर प्रदेश विधानसभा चुनाव में 'इंडिया' गठबंधन सरकार बनाएगा। बहुजन समाज पार्टी (बसपा) और चुनाव में उसके संभावित चुनौती बनने के बारे में पूछे जाने पर शिवपाल यादव ने कहा कि पार्टी का



राजनीतिक अस्तित्व समाप्त हो चुका है।

उन्होंने दावा किया, बसपा टूट गई है।

बीजेपी जो भी कहती है, बसपा वही करेगी 'इंडिया' गठबंधन के घटक दलों के बीच सीट बंटवारे के बारे में पूछे जाने पर यादव ने कहा कि इस पर निर्णय राष्ट्रीय नेतृत्व करेगा। यूपी के पूर्व मंत्री शिवपाल यादव ने कथित वोट चोरी से लेकर राम मंदिर में चढ़ावे में हुई गड़बड़ी को लेकर बीजेपी को घेरा। उन्होंने आरोप लगाया कि बीजेपी वोट की चोरी के साथ ही 'भगवान' को चढ़ाए जाने वाले चढ़ावे की भी चोरी करती है।

निर्वाचन आयोग के बारे में पूछे जाने पर उन्होंने कहा कि लोग अब सड़कों पर हैं और मांग कर रहे हैं कि चुनाव निष्पक्ष रूप से कराए जाएं। उन्होंने कहा, चुनाव ईमानदारी से होने चाहिए। शिवपाल यादव मंगलवार दोपहर में कन्नौज पहुंचे। इस दौरान उनका जोरदार स्वागत किया गया। उन्होंने सपा नेता जय कुमार तिवारी बौवन के आवास पर आयोजित श्रीमद् भागवत कथा में भी भाग लिया।



Sanjay Sharma

editor.sanjaysharma
@Editor_SanjayS

66

जब जीवन के अंतिम पड़ाव पर मिलने वाली सुरक्षा और गरिमा भी पूरी तरह से बाजारवाद की वस्तु बन जाए, तो समाज के गरीब, निम्न-मध्यमवर्गीय और सर्वहारा बुजुर्गों के जीवित रहने की उम्मीदें ही दम तोड़ने लगती हैं।

जिद... सच की

वृद्धाश्रमों की बढ़ती संख्या समाज में बुजुर्गों की दुदर्शा दर्शा रहे

आज शहरों में वृद्धाश्रमों की बढ़ती संख्या समाज में माता-पिता के प्रति सोच को दर्शाने के लिए काफी हैं। आज के बच्चे बुजुर्गों के साथ समय नहीं बिताना चाहते जो बहुत ही गलत दिशा को बता रहा है। यह इस कड़वी हकीकत को उजागर करता है कि जो वृद्धाश्रम कभी करुणा, सेवा और निस्वार्थ आश्रय के पवित्र केंद्र हुआ करते थे, वे अब कॉर्पोरेट शैली के आलीशान रिसॉर्ट्स और फाइव स्टार होटलों में तब्दील हो चुके हैं। जब जीवन के अंतिम पड़ाव पर मिलने वाली सुरक्षा और गरिमा भी पूरी तरह से बाजारवाद की वस्तु बन जाए, तो समाज के गरीब, निम्न-मध्यमवर्गीय और सर्वहारा बुजुर्गों के जीवित रहने की उम्मीदें ही दम तोड़ने लगती हैं। यह स्थिति इस बुनियादी लोकतांत्रिक और मानवीय सवाल को जन्म देती है कि क्या सम्मान से जीने और शांति से मरने का अधिकार केवल समाज के धनाढ्य वर्ग तक ही सीमित रह गया है? पुणे के समीप संचालित एक आधुनिक वृद्धाश्रम में जब एक बेसहारा बुजुर्ग के दाखिले के लिए संपर्क किया गया, तो वहां का मासिक शुल्क पचास हजार रुपये बताया गया।

यह केवल एक आर्थिक आंकड़ा नहीं है, बल्कि यह हमारे समकालीन समाज के बदलते चरित्र, नैतिक पतन और बुजुर्गों के प्रति संवेदनहीनता का एक भयावह दस्तावेज है। भारत जैसे विकासशील देश में, जहां एक आम कामकाजी नागरिक या सेवानिवृत्त व्यक्ति की पूरी मासिक आय भी अक्सर इस आंकड़े तक नहीं पहुंच पाती, वहां बुढ़ापे की शरणस्थली का इतना खर्चीला होना एक गंभीर सामाजिक संकट की ओर इशारा करता है। इस संकट की जड़ें हमारे सामाजिक और पारिवारिक ढांचे में आए गहरे बिखराव से जुड़ी हुई हैं। भारत की पहचान सदियों से संयुक्त परिवार की उस व्यवस्था से रही है, जहां बुजुर्गों को घर का बराद माना जाता था, जिनकी छत्रछाया में पूरी गोत्र और पीढ़ियां खुद को सुरक्षित महसूस करती थीं। लेकिन वैश्वीकरण, तीव्र शहरीकरण और आधुनिक जीवनशैली की अंधी दौड़ ने इस पारंपरिक ताने-बाने को छिन्न-भिन्न कर दिया है। आज की युवा पीढ़ी रोजगार, करियर और व्यक्तिगत स्वतंत्रता की तलाश में महानगरों या सुदूर विदेशों की ओर पलायन कर रही है, जहां उनके जीवन में माता-पिता के लिए स्थान संकुचित होता जा रहा है। कई मामलों में तो युवा दंपति बुजुर्गों को अपने साथ रखना एक अनुत्पादक बोझ समझने लगते हैं। इसी पारिवारिक अलगाव और सामाजिक लाचारी को आज कॉर्पोरेट जगत ने एक बहुत बड़े व्यावसायिक अवसर के रूप में पहचान लिया है। अब इन संस्थाओं को वृद्धाश्रम जैसे पारंपरिक और संवेदनशील नामों के बजाय सीनियर लिविंग सोसाइटीज, सिल्वर होम्स या रिटायरमेंट रिसॉर्ट्स जैसे आकर्षक और भ्रामक नामों से प्रचारित किया जा रहा है।

Sanjay

(इस लेख पर आप अपनी राय 9559286005 पर एसएमएस या info@4pm.co.in पर ई-मेल भी कर सकते हैं)

संवैधानिक आजादी के मायने कानूनी आजादी नहीं

एस. वाई. कुरैशी

कई महीनों से, मतदाता सूची में 'विशेष गहन पुनरीक्षण' यानी एसआईआर ने मतदाताओं को परीक्षा में डाल रखा है। सोमवार को, सर्वोच्च न्यायालय में केंद्रीय चुनाव आयोग के फैसले लेने के तौर-तरीके पर सवाल उठे। न्यायालय उन याचिकाओं पर सुनवाई कर रहा था जो इन खबरों से जुड़ी थीं कि चुनाव आयुक्त सुखबीर सिंह संधू और विवेक जोशी ने आयोग के नाम पर लिए गए फैसलों या कामों पर कम से कम 14 बार आपत्तियां जताई थीं। वरिष्ठ वकील विकास सिंह ने मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार को तुरंत पद से हटाने की मांग की। न्यायालय ने इसे अस्वीकार करके सही किया कि केवल अखबार की खबरों के आधार पर और एकतरफा तौर पर ऐसा असाधारण कदम नहीं उठाया जा सकता।

लेकिन इसके बाद जस्टिस सूर्यकांत ने कहा कि उम्मीद की जाती है कि आयोग के फैसले आम सहमति से हों; जहां आम सहमति संभव न हो, वहां निर्णय बहुमत के आधार पर हो। न्यायमूर्ति जॉयमाल्या बागची ने कहा कि अगर रिकॉर्ड से पता चलेगा कि कुछ निर्णय विशेष इस नियम के उलट लिए गए थे तो अदालत उन पर रोक लगा सकती है, उन्हें अधिकार-क्षेत्र से बाहर घोषित कर सकती है। अब एक नोटिस जारी किया गया है— विसंगति साबित करने में संबंधित लोगों का पक्ष सुना जाए। लेकिन विवाद का स्वरूप पूरी तरह बदल गया है। अब सवाल सिर्फ यह नहीं रहा कि क्या विशेष गहन पुनरीक्षण प्रशासनिक रूप से सुस्पष्ट है। इससे भी पहले एक सवाल उठता है क्या कुछ विवादित काम कानूनी तौर पर केंद्रीय चुनाव आयोग के फैसले थे भी या नहीं? 2023 के कानून की धारा 18 स्पष्ट है। इसका मुख्य कामकाज आम सहमति से होना चाहिए; जहां पर आयुक्तों की राय अलग-अलग हो, तो फैसला बहुमत के आधार पर लिया जाए। यह सिद्धांत 'मुख्य चुनाव आयुक्त

और अन्य चुनाव आयुक्तों' से भी पुराना है (संदर्भ : नियुक्ति, सेवा की शर्तें और कार्यकाल अधिनियम)। मुख्य चुनाव आयुक्त एक अध्यक्ष है, न कि एक कमांडर। सर्वोच्च न्यायालय ने टीएन शेषन मामले में भी यही कहा था। तीन सदस्यों वाली संवैधानिक संस्था में, दो सदस्यों की एक जैसी राय ही बहुमत है।

किसी सामूहिक संस्था के भीतर मतभेद होना सामान्य है, यहां तक कि जब सब 'ठीक' हो। जो चीज मायने रखती है, वह यह कि बाद में क्या होता है। अगर आयुक्त 'अ' कोई एक प्रस्ताव रखता है और बाकी दो 'भिन्न राय' दर्ज करते हैं, तो 'अ' के प्रस्ताव को 'केंद्रीय चुनाव आयोग' का फैसला नहीं कहा



जा सकता। फॉर्म 6 मतदाता पंजीकरण नियम, 1960 के तहत एक कानूनी प्रपत्र है। 'द इंडियन एक्सप्रेस' के हवाले से आई रिपोर्ट से पता चला कि आयुक्त जोशी ने मई में एक प्रशासनिक निर्देश के ज़रिए एसआईआर की जरूरतों में अतिरिक्त प्रावधान जोड़ने पर आपत्ति जताई थी। यह कहकर कि कानूनी फॉर्म में बदलाव के लिए पहले नियमों में संशोधन की जरूरत है। खबरों के मुताबिक, कमिश्नर संधू भी इससे सहमत थे। फिर भी, बदली हुई ऑनलाइन प्रक्रिया ईसीआई नेट पर दिखाई दी। सोमवार को मामला नए मोड़ पर पहुंचा, जब फॉर्म 6 में बदलाव का मुद्दा उठाया गया। मुख्य न्यायाधीश ने साफ किया कि सर्वोच्च न्यायालय ने इसका अनुमोदन नहीं किया था। यह भी कि अदालत इस बात की जांच करेगी कि 'किसने क्या बदलाव किया है'।

अब यही सवाल केंद्र में हो गया है। विशेष गहन पुनरीक्षण के बाद 'फॉर्म 6' ने एक और दिलचस्प भूमिका ले ली है। आयोग ने उन राज्यों और केंद्रशासित प्रदेशों के अधिकारियों को निर्देश दिया है, जहां एसआईआर प्रक्रिया पूरी हो चुकी है, कि वे पुरानी और संशोधित वोटर लिस्ट की तुलना करें। फिर उन पात्र मतदाताओं की पहचान की जाए, जिनके नाम लिस्ट से हटाए गए हैं। उन्हें फिर से शामिल करने में मदद करें। यह सुधारात्मक कदम बहुत अच्छा है। लेकिन जिस मतदाता का नाम 10, 20 या 30 साल से वोटर लिस्ट में था और एसआईआर के दौरान हटाया गया, उसे 'नए' मतदाताओं के लिए बने फॉर्म का

इस्तेमाल करने और यह झूठा बयान देने के लिए क्यों और कैसे कहा जा सकता है कि वह पहली बार नाम जुड़वाने के लिए आवेदन कर रहा है— नियमों के अनुसार ऐसा आपराधिक कृत्य है, जिसमें एक साल तक जेल की सजा हो सकती है? सूची से हटाया गया मतदाता नया मतदाता नहीं होता।

उसे लिस्ट में वापस शामिल किए जाने की जरूरत है, न कि पहली बार पंजीकरण की। अगर मौजूदा फॉर्म इसके लिए सही नहीं हैं, तो नियमों में बदलाव करके एक नया फॉर्म बनाया जाना चाहिए। पश्चिम बंगाल का मामला बड़ा संस्थागत सवाल खड़ा करता है। जांच-पड़ताल की प्रक्रिया के ज़रिए 27.16 लाख मतदाताओं के नाम हटाए जाने के बाद, खबरों के अनुसार 22.21 लाख लोगों ने नाम वापस जुड़वाने के लिए अपील की गयी है।

डॉ. सुधीर कुमार

शरद ऋतु के आगमन के साथ ही भारतवर्ष विजयादशमी, करवाचौथ, धनतेरस, दीपावली और छठ पूजा जैसे पर्वों के उल्लास में डूब जाता है। इन दिनों में बाजार रंग-बिरंगी मिठाइयों, खोया, पनीर, देशी घी और मसालों की दुकानों से पट जाते हैं। परंतु उत्सवों की ओट में एक भयावह खेल चल रहा होता है। त्योहारों के दौरान मांग और आपूर्ति के बीच पैदा होने वाले भारी अंतर का अनुचित लाभ उठाकर एक आपराधिक सिंडिकेट हमारी थाली में धीमा जहर परोसने का धंधा शुरू कर देता है। जिस मावे और पनीर की मिठाइयों को हम अपनों में प्रेम और शुभकामनाओं के रूप में बांटे हैं, उनमें यूरिया, डिटर्जेंट, कास्टिक सोडा, स्टार्च, सिंथेटिक पेंट और रिफाईंड तेल जैसे जानलेवा रसायनों की मिलावट होती है। यह केवल व्यापारिक धोखाधड़ी या उपभोक्ता के साथ छल नहीं है, बल्कि करोड़ों नागरिकों के स्वास्थ्य और जीवन के अधिकार पर किया जाने वाला सीधा और संगठित हमला है।

भारत में एफएसएसआई तथा खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम 2006 जैसा कानूनी ढांचा मौजूद तो है, लेकिन इसका व्यवहार में इसका निष्प्रभावी होना चिंता का विषय है। त्योहारों पर विभागीय छापों और सैंपलिंग के बाद प्रयोगशालाओं से महीनों तक रिपोर्ट न आना एक वार्षिक रस्म बन चुका है। जब तक लैब रिपोर्ट आती है, तब तक मिलावटी उत्पाद नागरिकों के पेट में जाकर उनके लीवर और गुर्दों को स्थायी क्षति पहुंचा चुके होते हैं। मुकदमों की धीमी गति का लाभ उठाकर दोषी आसानी से बच

मिठास में जहर घोलने के धंधे पर कानूनी सख्ती जरूरी



निकलते हैं, जिससे इस आपराधिक गिरोह का हौसला हर त्योहार पर दोगुना हो जाता है। न्यायपालिका ने इस स्थिति पर बार-बार सख्त रुख अपनाया है। संविधान के अनुच्छेद 21 के तहत प्रदत्त जीवन के मौलिक अधिकार को विस्तारित करते हुए सर्वोच्च न्यायालय ने इसमें 'सुरक्षित और शुद्ध भोजन पाने के अधिकार' को समाहित माना है। सेंटर फॉर पब्लिक इंटरेस्ट लिटिगेशन बनाम भारत संघ (2013) के मामले में शीर्ष अदालत ने स्पष्ट किया था कि नागरिकों को शुद्ध खाद्य पदार्थ उपलब्ध कराना राज्य का संवैधानिक उत्तरदायित्व है।

इसी कड़ी में दूध में मिलावट से संबंधित स्वामी अच्युतानंद तीर्थ बनाम भारत संघ (2016) के ऐतिहासिक मामले में सुप्रीम कोर्ट ने कड़े निर्देश जारी किए। न्यायालय ने सुझाव दिया कि यदि दूध या खाद्य पदार्थों में डिटर्जेंट या घातक रसायनों की मिलावट पाई जाए, जिससे मानव जीवन को गंभीर खतरा हो, तो ऐसे दोषियों को आजीवन कारावास की सजा का प्रावधान किया जाना चाहिए। विकसित

देशों में मिलावट के खिलाफ बेहद कठोर कानूनी व्यवस्था है। वैश्विक परिदृश्य के विपरीत भारत में सबसे बड़ी कानूनी चूक यह है कि जानबूझकर की गई जहरीली मिलावट को भी प्रायः सामान्य नियामकीय उल्लंघन माना जाता है। जब कोई व्यक्ति मावे या पनीर में कास्टिक सोडा, यूरिया या डिटर्जेंट मिलाता है, तो उसे भली-भांति पता होता है कि यह रसायन शरीर को धीरे-धीरे नष्ट कर देगा। यह केवल मिलावट या व्यापारिक छल नहीं, बल्कि आर्थिक लाभ के लिए किया जाने वाला 'धीमी हत्या का प्रयास' यानी अटेंप्ट टू कल्पेबल होमीसाइड (भारतीय न्याय संहिता की धारा 110 के तहत) है।

जिस प्रकार हथियार से हमला करना अपराध है, उसी प्रकार खाद्य पदार्थों के माध्यम से मानव शरीर में विष पहुंचाना एक प्रकार का 'जैव-रासायनिक अपराध' है। जब तक हमारी न्याय प्रणाली मिलावट को 'स्लो पॉइज़निंग' के समकक्ष रखकर आपराधिक मुकदमा दर्ज नहीं करेगी, तब तक इस सिंडिकेट पर नकेल कसना असंभव है। इस

विकट परिस्थिति से निपटने के लिए खाद्य सुरक्षा और मानक अधिनियम में तत्काल संशोधन करके जहरीली मिलावट को गैर-जमानती और गैर-शमनीय अपराध घोषित किया जाना चाहिए। इसमें न्यूनतम 10 वर्ष से लेकर आजीवन कारावास और अपराधियों की अवैध संपत्ति की कुर्की का स्पष्ट प्रावधान हो। प्रत्येक जिले में विशेष 'फास्ट-ट्रैक फूड कोर्ट्स' स्थापित किए जाएं, जहां अधिकतम छह महीने के भीतर फैसला अनिवार्य हो। तकनीकी स्तर पर, केवल अंतिम उत्पाद की सैंपलिंग के बजाय सप्लाय चेन के शुरुआती बिंदु पर निगरानी रखी जाए। डेयरी उद्योग और मावा मंडियों में 'ब्लॉकचेन तकनीक' और 'क्यूआर कोड' प्रणाली लागू की जाए, जिससे उत्पाद की उत्पत्ति की पूरी जानकारी मिल सके।

साथ ही, हर जिले में एनएबीएल मान्यता प्राप्त मोबाइल टेस्टिंग लैब की व्यवस्था हो और व्हिसलब्लोअर्स को प्रोत्साहन व सुरक्षा दी जाए। त्योहार हमारी सांस्कृतिक विरासत के संवाहक हैं, उन्हें किसी के लालच की बलि नहीं चढ़ने दिया जा सकता। दीपावली का प्रकाश तब तक अधूरा रहेगा जब तक हमारी थाली में घुला मिलावट का अंधकार समाप्त नहीं होता। सरकारों, प्रशासन और एफएसएसआई को अब अपनी शिथिलता त्याग कर संदेश देना होगा कि नागरिकों की सेहत से खिलवाड़ करने वालों के लिए कोई कानूनी रियायत नहीं होगी। जब कठोर कानून, त्वरित न्याय प्रणाली, आधुनिक तकनीक और नागरिक सतर्कता साथ मिलकर कार्य करेंगे, तभी हम अपने पर्वों की वास्तविक पवित्रता और मिठास को अक्षुण्ण रख पाएंगे।

मानसिक स्वास्थ्य की भागदौड़ भरी जिंदगी में देखभाल जरूरी

आज की जिंदगी में तनाव से पूरी तरह बचना मुश्किल है। नौकरी का दबाव, कारोबार की चिंता, पढ़ाई, परिवार की जिम्मेदारियां, आर्थिक समस्याएं, रिश्तों में तनाव और लगातार बदलती परिस्थितियां किसी भी व्यक्ति पर मानसिक दबाव डाल सकती हैं। कुछ समय के लिए तनाव शरीर की सामान्य प्रतिक्रिया हो सकता है। समस्या तब पैदा होती है जब तनाव लंबे समय तक बना रहे और व्यक्ति की नींद, काम, रिश्तों या रोजमर्रा के जीवन को प्रभावित करने लगे। मानसिक स्वास्थ्य का मतलब केवल मानसिक बीमारी का न होना नहीं है। डब्ल्यूएचओ के अनुसार मानसिक स्वास्थ्य व्यक्ति की भावनात्मक और सामाजिक क्षमता तथा रोजमर्रा की जिंदगी की चुनौतियों से निपटने की क्षमता से भी जुड़ा है। इसलिए मानसिक स्वास्थ्य को शरीर के स्वास्थ्य से अलग करके नहीं देखा जाना चाहिए।



तनाव के संकेत पहचानें

लगातार चिंता, चिड़चिड़ापन, नींद में बदलाव, ध्यान लगाने में परेशानी, थकान, सामाजिक गतिविधियों से दूरी या काम में रुचि कम होना कुछ लोगों में तनाव या अन्य मानसिक स्वास्थ्य समस्याओं के संकेत हो सकते हैं। हालांकि इन लक्षणों के कई कारण हो सकते हैं। इसलिए लंबे समय तक बने रहने वाली समस्या को नजरअंदाज करने के बजाय विशेषज्ञ से सलाह लेना बेहतर है।

व्यायाम आवश्यक

शारीरिक गतिविधि सिर्फ शरीर के लिए नहीं, मानसिक स्वास्थ्य के लिए भी उपयोगी हो सकती है। पैदल चलना, योग, साइकिल चलाना या अपनी क्षमता के अनुसार व्यायाम तनाव को संभालने में मदद कर सकता है। इसलिए व्यक्ति को अपनी क्षमता के अनुसार धीरे-धीरे शुरुआत करनी चाहिए।

मदद मांगना कमजोरी नहीं

मानसिक स्वास्थ्य को लेकर समाज में आज भी कई गलत धारणाएं हैं। कई लोग मनोवैज्ञानिक या मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ से संपर्क करने में इसलिए हिचकते हैं क्योंकि उन्हें डर होता है कि लोग उन्हें कमजोर समझेंगे। यह सोच बदलने की जरूरत है। जिस तरह लगातार सीने में दर्द होने पर डॉक्टर से मिलना सामान्य है, उसी तरह लगातार मानसिक परेशानी होने पर विशेषज्ञ से मिलना भी स्वास्थ्य देखभाल का सामान्य हिस्सा है।



नींद जरूरी

मानसिक और शारीरिक स्वास्थ्य के लिए अच्छी नींद महत्वपूर्ण है। अनियमित सोने का समय और रात में लंबे समय तक मोबाइल या कंप्यूटर का इस्तेमाल नींद की गुणवत्ता को प्रभावित कर सकता है। सोने और जागने का समय नियमित रखना, सोने से पहले स्क्रीन टाइम कम करना और शांत वातावरण बनाना मददगार हो सकता है।

काम और आराम के बीच संतुलन

लगातार काम करना उत्पादकता की गारंटी नहीं है। दिन में छोटे ब्रेक लेना, पर्याप्त नींद लेना, परिवार के साथ समय बिताना और अपनी रुचियों के लिए समय निकालना मानसिक स्वास्थ्य के लिए उपयोगी हो सकता है। कारोबार और नौकरी की जिम्मेदारियों के बीच स्वयं के लिए समय निकालना भी स्वास्थ्य देखभाल का हिस्सा है।

किसी से बात करना जरूरी

तनाव में व्यक्ति कई बार खुद को सबसे अलग कर लेता है। परिवार, मित्र या किसी भरोसेमंद व्यक्ति से बातचीत करना भावनात्मक समर्थन दे सकता है। हालांकि गंभीर या लगातार मानसिक परेशानी में केवल बातचीत पर्याप्त नहीं हो सकती। ऐसी स्थिति में मानसिक स्वास्थ्य विशेषज्ञ की मदद लेना उचित है।

मनीष कुमार मोर्य

मिथक

बनाम तथ्य

तनाव सिर्फ कमजोर लोगों को होता है। लेकिन तनाव जीवन की परिस्थितियों के प्रति सामान्य मानवीय प्रतिक्रिया हो सकता है। मानसिक परेशानी सिर्फ सोच बदलने से ठीक हो जाती है। लेकिन कुछ स्थितियों में पेशेवर सहायता, परामर्श या उपचार की जरूरत हो सकती है।



हंसना मना है

फ्रेंड: यार तुम्हारी दुकान मिठाई की है, तो क्या तुम्हारा दिल नहीं करता, मिठाई खाने को? सांता: यार करता तो बहोत है, लेकिन पापा रसगुल्ले गिन के जाते हैं, तो... इसलिए, चूसकर रख देता हूं।

मैं बचपन से इतना प्रतिभाशाली रहा हूं कि रिश्तेदार परीक्षा परिणाम के बाद सिर्फ इतना ही पूछते हैं, तू पास हुआ या नहीं?

सरदार अपनी बीवी के साथ टैक्सी में बैठा, ड्राइवर ने आईना सेट किया, ये देखते ही सरदार: मेरी बीवी को देखता है, तु पीछे बैठ टैक्सी मैं चलाऊंगा!

हम हमेशा दो लोगों के लिए अगरबत्ती लगाते हैं, एक भगवान के लिए, उन्हें बुलाने के लिए.. और दूसरी अगरबत्ती मच्छर के लिए, उन्हें भगाने के लिए.. पर होता उसके बिलकुल उलटा है.. भगवान आते नहीं हैं और मच्छर है कि जाते नहीं हैं।

एक व्यक्ति हेलीकॉप्टर उड़ाना सीख रहा था! पांच सौ फुट की ऊंचाई पर उड़ते-उड़ते अचानक हेलीकॉप्टर नीचे आ गिरा... प्रशिक्षक ने पूछा - क्या हुआ... जवाब मिला - कुछ नहीं, ऊपर जाकर मुझे ठंड लगने लगी, सो मैंने पंखे बंद कर दिए थे...

कहानी

अपनी भाषा पर गर्व

बात उन दिनों की है जब स्वामी विदेश यात्रा पर गए थे। वहां उनके आदर-सत्कार के लिए कई लोग आए। उनमें से कुछ लोगों ने स्वामी से साथ हाथ मिलाना चाहा और कुछ ने अंग्रेजी में उनसे 'हेलो' कहा। स्वामी विवेकानंद ने जवाब में हाथ जोड़ते हुए सबको नमस्कार कहा। यह देखकर कुछ लोगों ने सोचा कि स्वामी को अंग्रेजी नहीं आती है, इसलिए वो जवाब में नमस्ते कह रहे हैं। ऐसा सोचकर भीड़ में से एक व्यक्ति ने स्वामी विवेकानंद से हिंदी में पूछा कि आप कैसे हैं? हिंदी में सवाल सुनकर स्वामी विवेकानंद मुस्कराए और उसे इंग्लिश में जवाब दिया, आई एम फाइन, थैंक यू। स्वामी विवेकानंद का अंग्रेजी में जवाब सुनकर वहां मौजूद सभी लोग हैरान रह गए। लोगों के मन में हुआ कि जब इनसे अंग्रेजी में सवाल किया गया तब हिंदी में जवाब मिला और फिर हिंदी में बात करने पर इंग्लिश में जवाब मिला। आखिर ऐसा क्यों हुआ। तभी एक व्यक्ति ने स्वामी विवेकानंद से यह सवाल पूछ ही लिया। इसका जवाब देते हुए स्वामी विवेकानंद ने बड़ी ही विनम्रता से कहा कि जब आप लोगों ने अंग्रेजी में बात करके अपनी भाषा को आदर दिया, तब मैंने अपनी भाषा को मां मानकर उनका सम्मान करते हुए हिंदी में जवाब दिया। स्वामी विवेकानंद की इस बात को सुनकर वहां मौजूद सारे विदेशी हैरान रह गए और तभी से हिंदी भाषा को पूरे विश्व में सम्मान मिलने लगा। इस किस्से से स्वामी विवेकानंद का अपनी भाषा और संस्कृति के प्रति प्यार और आदर झलकता है।

कहानी की सीख: हमेशा अपनी राष्ट्र भाषा को सम्मान देना और उस पर गर्व महसूस करना चाहिए। साथ ही अन्य भाषाओं का भी इतना ज्ञान होना जरूरी है कि हम सामने वाले की बात को समझ सकें।

7 अंतर खोजें



पंडित संदीप आत्रेय शास्त्री

जानिए कैसा रहेगा कल का दिन

लेखक प्रसिद्ध ज्योतिषविद हैं। सभी प्रकार की समस्याओं के समाधान के लिए कॉल करें-9837081951

मेष 	कार्यक्षेत्र में आपके काम की प्रशंसा होगी। व्यापारिक सौदों में लाभ के योग हैं। पारिवारिक माहौल सुखद और शांतिपूर्ण रहेगा। वित्तीय मामलों में दिन शुभ रहेगा।	तुला 	कार्यक्षेत्र में रुकी हुई योजनाएं चल पड़ेंगी। व्यापार में लाभ के मजबूत योग हैं। मित्रों और परिवार का साथ मिलेगा। आर्थिक मजबूती देखने को मिलेगी।
वृषभ 	नौकरी में सावधानी बरतें, बहस से दूर रहें। व्यापार में जल्दबाजी में निर्णय न लें। परिवार के सदस्यों का सहयोग मिलेगा। खर्चों पर थोड़ा अंकुश लगाना होगा।	वृश्चिक 	कार्यस्थल पर नई जिम्मेदारी मिल सकती है। व्यापार में सोची-समझी नीति काम करेगी। परिवार में मांगलिक वातावरण रहेगा। धन लाभ होने की पूरी संभावना है।
मिथुन 	कार्यक्षेत्र में नई संभावनाएं बनेंगी। व्यापारिक यात्राएं सफल और लाभदायक होंगी। प्रेम संबंधों में निकटता और विश्वास बढ़ेगा। आय के नए साधन बनेंगे।	धनु 	धार्मिक कार्यों में रुचि बढ़ेगी, सफलता मिलेगी। व्यापार में नए अवसर सामने आएंगे। संतान पक्ष से राहत मिलेगी। आर्थिक पक्ष सुदृढ़ रहेगा। मानसिक शांति बनी रहेगी।
कर्क 	कार्यस्थल पर वरिष्ठ अधिकारियों की मदद मिलेगी। व्यापार में अच्छा मुनाफा कमाने का मौका है। परिवार में खुशी का माहौल बना रहेगा। स्वास्थ्य उत्तम रहेगा, ताजगी रहेगी।	मकर 	कामकाज में एकाग्रता बनाए रखें। व्यापार में कोई भी जोखिम न उठाएं। पारिवारिक सहयोग से समस्याएं सुलझेंगी। अनावश्यक खर्चों को रोकें। स्वास्थ्य अनुकूल रहेगा।
सिंह 	करियर में बड़ी उपलब्धि मिल सकती है। व्यापार में नेटवर्किंग से भारी लाभ होगा। दायित्व जीवन सुखमय रहेगा। आर्थिक स्थिति में सुधार आएगा।	कुम्भ 	कार्यक्षेत्र में नए मुकाम हासिल होंगे। व्यापार में बड़ा आर्थिक लाभ हो सकता है। निजी जीवन में खुशियां बनी रहेंगी। आर्थिक स्थिति पहले से बेहतर होगी।
कन्या 	काम में जल्दबाजी से नुकसान हो सकता है। व्यापार में सतर्कता से कदम बढ़ाएं। परिवार में शांति बनाए रखने का प्रयास करें। आय-व्यय का संतुलन बनाए रखें।	मीन 	कार्यस्थल पर आपकी बातों का प्रभाव पड़ेगा। व्यापार में विस्तार की योजनाएं बनेंगी। परिवार में आनंद का माहौल रहेगा। धन संचय में सफलता मिलेगी।

मौत के लिए तैयार थे नाना, फार्महाउस पर इकट्ठा की थी लकड़ियां

ना ना पाटेकर का निधन 8 अक्टूबर को 75 साल की उम्र में कार्डियक अरेस्ट के चलते हो गया। उनके जाने से फिल्म इंडस्ट्री में शोक की लहर है। नाना पाटेकर का अंतिम संस्कार भी हो चुका है। इस बीच मशहूर फोटोग्राफर अतुल कर्बेकर ने नाना को याद करते हुए एक ऐसा किस्सा साझा किया है, जो उनके बेहद अलग और बेबाक अंदाज की पूरी कहानी कह देता है। नाना ने अपने ही अंतिम संस्कार के लिए लकड़ियां पहले से संभालकर रखी थीं और इसकी वजह भी ऐसी बताई थी कि सुनकर पहले हंसी आएगी, फिर आंखें नम हो जाएंगी।

'नाना साहब क्या आदमी थे!'

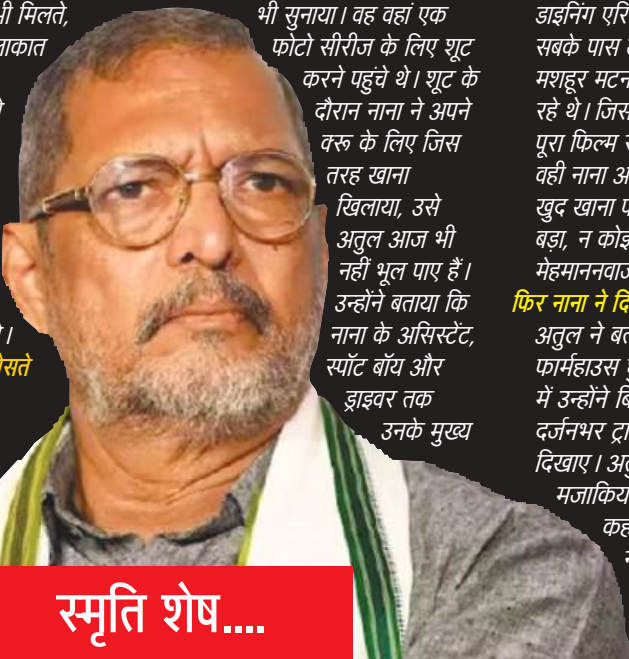
अतुल कर्बेकर ने गुरुवार को इंस्टाग्राम पर नाना की एक ब्लैक एंड व्हाइट तस्वीर शेयर करते हुए उन्हें याद किया। उन्होंने लिखा कि नाना के साथ उनका रिश्ता बेहद गर्मजोशी भरा था। दोनों अक्सर

नहीं मिलते थे, लेकिन जब भी मिलते, ऐसा लगता जैसे कल ही मुलाकात हुई हो।

अतुल ने नाना को याद करते हुए उन्हें 'अनप्रोडिक्टिव, इंटेंस और अपने उसूलों पर चलने वाला इंसान' बताया। उनके मुताबिक नाना ऐसे शख्स थे, जो अपनी मौजूदगी भर से पूरे फिल्म सेट पर असर डाल सकते थे।

फार्महाउस पर खुद खाना परोसते थे नाना

अतुल ने पुणे स्थित नाना के फार्महाउस की एक मुलाकात का किस्सा



स्मृति शेष....

भी सुनाया। वह वहां एक फोटो सीरीज के लिए शूट करने पहुंचे थे। शूट के दौरान नाना ने अपने कुरु के लिए जिस तरह खाना खिलाया, उसे अतुल आज भी नहीं भूल पाए हैं। उन्होंने बताया कि नाना के असिस्टेंट, स्पॉट बॉय और ड्राइवर तक उनके मुख्य

ड्राइविंग एरिया में साथ बैठे थे। नाना खुद सबके पास जाकर रोटियां और अपने मशहूर मटन की अतिरिक्त सर्विंग परोस रहे थे। जिस अभिनेता की एक नजर से पूरा फिल्म सेट खामोश हो सकता था, वही नाना अपने लोगों के बीच बैठकर खुद खाना परोस रहे थे। न कोई छोटा-बड़ा, न कोई दिखावा- बस दिल खोलकर मेहमाननवाजी।

फिर नाना ने दिखाई वो लकड़ियां

अतुल ने बताया कि नाना ने उन्हें अपना फार्महाउस घुमाया। यहां तक कि जिम में उन्होंने बिना किसी वार्मअप के करीब दर्जनभर ट्राइसेप डिप्स भी करके दिखाए। अतुल ने इस अंदाज में उन्हें मजाकिया तौर पर 'शो-ऑफ' तक कह दिया। लेकिन इसके बाद नाना ने जो दिखाया, वह यादगार बन गया।

अतुल ने लिखा कि

नाना ने उन्हें अपने अंतिम संस्कार के लिए जमा करके रखी गई लकड़ियों का ढेर दिखाया था।

'गीली लकड़ी से धुआं होगा, लोग रोएंगे नहीं तो?' नाना ने अतुल को बताया था कि उन्होंने लकड़ियों को सूखा कर रखा है। वजह सुनकर शायद कोई भी हैरान रह जाए। नाना का कहना था कि अगर लकड़ी गीली हुई तो बहुत धुआं निकलेगा और अंतिम संस्कार में आने वाले लोग धुएं की वजह से आंखों में पानी आने पर रोने लगेंगे। वह नहीं चाहते थे कि उनके अंतिम संस्कार में लोग धुएं की वजह से रोएं। यही नाना का अंदाज था। जहां कोई इंसान मौत और अंतिम संस्कार की बात पर गंभीर हो जाता, वहां नाना ने उसी पल में भी अपना काला हास्य और बेबाकी खोज ली। अतुल ने लिखा कि सिर्फ नाना साहब ही अपने अंतिम संस्कार को भी कॉमेडी में बदल सकते थे।

अभिनेत्री से सामाजिक कार्यकर्ता बनीं सोमी अली

अभिनेत्री से सामाजिक कार्यकर्ता बनीं सोमी अली ने घरेलू हिंसा, मानव तस्करी और शोषण से पीड़ित लोगों की मदद में कई साल बिताए हैं। वह एक एनजीओ भी चलाती हैं। तीसरा कौन, चुप, यार गद्दार, आंदोलन, माफिया और आओ प्यार करें जैसी फिल्मों के लिए जानी जाने वाली अली बाद में लाइमलाइट से दूर हो गईं। उन्होंने सामाजिक काम करने के लिए फिल्मों से दूरी बनाई। अक्टूबर घरेलू हिंसा जागरूकता माह होता है, लेकिन अली का कहना है कि इस मुद्दे को सिर्फ एक महीने के कैपेन की तरह नहीं देखा जा सकता। वह कहती हैं कि उनके एनजीओ को रोजाना लगभग 30 कॉल आते हैं और यह पूरे साल काम करता है। सोमी कहती हैं, हमारे लिए अक्टूबर किसी कैपेन की तरह नहीं आता। यह उस महीने के तौर पर आता है जब बाकी दुनिया आखिरकार जोर से वह बात कहती है, जो हमारी हेल्पलाइन पर हर दिन सुनी जाती है।

सोमी अली आगे कहती हैं, घरेलू हिंसा जागरूकता माह वह समय होता है जब अजनबी लोग वह सवाल पूछते हैं जिसे हम हर पल जीते हैं। शोषण कभी छुट्टी नहीं लेता। कॉल भी कभी नहीं रुकते। अभिनेत्री का मानना है कि सिर्फ जागरूकता से पीड़ित की जिंदगी नहीं बदल सकती। वह कहती हैं,

पर्पल रिबन लगाना ही असली काम नहीं है। असली काम रिबन वाले दिन के बाद की रात में होता है, जब पीड़ित को आखिरकार यकीन हो जाता है कि वह घर छोड़ सकती है। सिर्फ जागरूकता काफी नहीं है।

अली कहती हैं मैंने यह एनजीओ इसलिए शुरू किया क्योंकि मैंने उस खामोशी को खुद महसूस किया था। अपने बचपन में और उन महिलाओं की जिंदगी में जो दूसरे देशों से आकर यहां बसी थीं और जिनके पास ऐसी कोई जगह नहीं थी जहां उनकी भाषा, उनके वीजा और वापस भेजे जाने के उनके डर को समझा जा सके।

वह समाज से यह भी अपील करती हैं कि वे पीड़ितों की बात पर यकीन करें और युवाओं को अच्छे रिश्तों के बारे में सिखाएं। वह कहती हैं, पहली रिपोर्ट पर यकीन करें। ज्यादातर महिलाएं बात को बढ़ा-चढ़ाकर नहीं बतातीं, बल्कि वे उसे कम करके बताती हैं। बचाव का काम तो बस पहले घंटे का होता है। ठीक होने में अगला

पूरा साल लग जाता है। वह आगे कहती हैं, अक्टूबर वह महीना है जब हम आपसे कहते हैं कि आप मुंह न मोड़ें।



फिल्म शाका लाका बूम बूम के लिए मेरा भुगतान नहीं किया गया : शहजाद खान

शहजाद खान बॉलीवुड फिल्म अंदाज अपना अपना और टीवी शो शाका लाका बूम बूम में अपनी यादगार भूमिकाओं के लिए जाने जाते हैं।

दर्शकों ने उनके प्रदर्शन को पसंद किया।

शहजाद ने दावा किया है कि अंदाज अपना अपना और शाका लाका बूम बूम के लिए उनका भुगतान नहीं किया गया है। उन्होंने यह भी बताया कि उनके पिता के विलेन की भूमिका निभाने की वजह से उनके बचपन पर कैसा असर पड़ा।

पैसे ना देने वाला याद रहता है शाका लाका बूम बूम में अपने अभिनय को याद करते हुए, शहजाद ने खुलासा किया, उसके पैसे आज तक नहीं मिले। जिनके पैसे नहीं मिले वो प्रोजेक्ट सुपरहिट हुए। जिसने आपको पैसे दिए आप उसे ज्यादा याद नहीं रखते लेकिन जिसने आपको चोट दी है, जिसने आपको पैसे

नहीं दिए वो आपको मरते दम तक याद रहेगा। उन्होंने आगे दावा किया कि उन्हें

अंदाज अपना अपना के लिए भी भुगतान नहीं मिला।

शहजाद ने कहा उसके (अंदाज अपना अपना) भी पैसे नहीं मिले। स्टाफ ने मुझसे ज्यादा कमाई की। पिछले दिनों मैं अपने स्टाफ से ही कहता था, तू 100 दे, 200 दे, क्योंकि वो प्रति दिन पे थे और मैं कॉन्ट्रैक्ट पे। मुझे जो साइनिंग अमाउंट मिल गया, बस वही था। अभिनेता ने दावा किया कि इसके बाद वह और फिल्म के निर्माता परिवार की तरह हो गए। वह उनके साथ बाहर घूमने भी गए। अभिनेता शहजाद खान ने बताया कि कैसे उनके पिता की स्क्रीन पर विलेन वाली मशहूर इमेज का उनके बचपन पर असर पड़ा। शहजाद ने कहा, लड़कियां मुझसे बहुत डरती थीं। वे कहती थीं, इसका बाप अच्छा आदमी नहीं है। वह हीरोइन की मां को किडनैप कर लेता है, हीरोइन के साथ बदतमीजी करता है, हीरो को मारता-पीटता है।



टीवी प्रेजेंटर और बिग बॉस की पूर्व कंटेस्टेंट शोफाली बग्गा को लेकर बड़ी खबर सामने आ रही है। शोफाली ने महादेव बेटिंग ऐप से मिले पैसे स्वेच्छा से ED को सौंप दिए हैं।

महादेव ऑनलाइन बेटिंग ऐप सिंडिकेट मामले की जांच कर रही प्रवर्तन निदेशालय ने छत्तीसगढ़ की रायपुर कोर्ट में अपनी चार्जशीट पेश की है। चार्जशीट के मुताबिक, टीवी एंकर और एक्स बिग बॉस

कंटेस्टेंट शोफाली बग्गा ने अवैध ऐप के प्रमोशन के बदले महादेव ऑनलाइन बेटिंग ऐप सिंडिकेट के सदस्यों से मिली रकम एजेंसी को सौंप दी है। ये शायद पहला ऐसा मामला हो सकता है, जब किसी अवैध

सिंडिकेट से मिली अपराध की आय किसी व्यक्ति ने खुद ED को लौटा दी हो। जांच में ED को पता चला कि अवैध बेटिंग ऐप के प्रमोशनल वीडियो बनाने के लिए बग्गा को कुल 1.5 करोड़ रुपये का भुगतान किया गया था।



शोफाली बग्गा ने ईडी को सौंपे 1.20 करोड़ रुपये

3 मिनट 56 सेकंड के रणबाली ट्रेलर में विजय का दिग्गज अवतार

साथ कपल विजय देवरकोंडा और रश्मिका मंदाना शादी के बाद पहली बार फिल्म रणबाली में एक साथ पर्दे पर नजर आने वाले हैं। फिल्म को लेकर काफी बज बना हुआ है। इसी बीच मेकर्स ने रणबाली का 3 मिनट 56 सेकंड लंबा ट्रेलर रिलीज कर दिया है। ट्रेलर में विजय दमदार अवतार में नजर आ रहे हैं, वहीं रश्मिका के साथ उनकी केमिस्ट्री भी देखने को मिल रही है। फिल्म की कहानी साउथ इंडिया में अंग्रेजों की बनाई गई भुखमरी के इर्द-गिर्द घूमती है। रणबाली का ट्रेलर सिंगनमाला हिल के रणबाली की कहानी बताने वाले एक लोक प्रदर्शन से शुरू होता है। लोककथा के मुताबिक, कई साल पहले एक महिला ने गुफा में रणबाली को जन्म दिया था। इसके



बाद भविष्यवाणी की जाती है कि उसकी किस्मत में कुछ बड़ा लिखा है।

ट्रेलर में आगे गांववालों को अंग्रेजों के लिए मजदूरी करते हुए दिखाया जाता है। हालांकि, मजदूरी देने के बजाय अंग्रेज गांववालों के साथ बुरा व्यवहार करते हैं और उनका शोषण करते हैं। इसके बाद रणबाली अंग्रेजों के गांव में होने और उनके अधिकार पर सवाल उठाता है। वहीं, ट्रेलर में आगे विजय और रश्मिका मंदाना के करिदार की शादी दिखाई गई। ट्रेलर के आखिर में विजय देवरकोंडा के करिदार की एक दमदार झलक देखने को मिलती है। ट्रेलर रिलीज करते हुए मेकर्स ने लिखा कि पीढ़ियों से चली आ रही ये कहानियां लोककथाओं में आज भी जिंदा हैं। अब इन्हें दुनिया भर के बड़े पर्दे पर लाने की कोशिश की जा रही है। रणबाली 16 अक्टूबर को सिनेमाघरों में रिलीज होगी।

सिंडिकेट का खेल : अड़चनों का अंबार

पाँश कॉलोनी के मकानों में दाखिल -खारिज पर फंसा पेंच

» शहर में एक व्यापारी ने बसाई थी कॉलोनी
» गाटों के चक्कर में चकराधिनी बने खरीदार
» वली चौधरी/4पीएम न्यूज़ नेटवर्क



डीएम बोले- बिन्दुवार जांच होगी

सीतापुर। शहर में एक व्यापारी द्वारा बसाई गई पाँश कॉलोनी में बड़ी संख्या में मकानों के दाखिल खारिज में पेंच फंसा गया है, ऐसे में जिलाधिकारी ने नगर मजिस्ट्रेट सहित तीन सदस्यीय टीम से जांच कराए जाने की बात कही है। दरअसल, शहर में कॉलोनी बसाने वाले ने बिक्री के समय से ही खेल कर दिया। अलग- अलग गाँवों में दर्ज किसानों को शामिल करते हुए उन्हीं से ही खरीदारों को रजिस्ट्री करा दी, ऐसा इसलिए ताकि खेल में वो और उनका सिंडिकेट न फंस सके। रजिस्ट्री में कई गाँवों का उल्लेख किया। ऐसे में जब जमीन खरीदने वाले दाखिल खारिज कराने के लिए नगर

बिजली के पोल और मरघट को लेकर हो चुका है बवाल : वरिष्ठ अधिवक्ता पूनम मिश्रा

समाजसेवी व जिले की वरिष्ठ अधिवक्ता पूनम मिश्रा बताती हैं कि कॉलोनी बसाने वाले लोगों ने रातो-रात हाईटेक लाइन को खिसकाने के उद्देश्य से पोल के इर्द गिर्द खोदई करनी शुरू कर दी, इतना ही नहीं मढ़िया गाँव के मरघट वी भूमि पर भी कब्जे का प्रयास हुआ, ऐसे समय में वरिष्ठ अधिवक्ता के हस्तक्षेप के बाद ही आमजन को राहत मिल सकी।



मजिस्ट्रेट कार्यालय पहुंचे, तो उन्हें अड़चनों का सामना करना पड़ा। मामले में जिलाधिकारी डॉ. राजा गणपति आर. का कहना है कि खरीदारों द्वारा लगाए गए

आरोपों की बिन्दुवार जांच के लिए नगर मजिस्ट्रेट सहित त्रिस्तरीय अधिकारियों को लगाया गया है, छह दिनों के भीतर स्थितियां स्पष्ट हो जाएंगी।

2021 की महायोजना में जी श्रेणी का उल्लेख



वर्ष 2011 में 2021 महायोजना बनकर तैयार हुई, जिसमें जी श्रेणी की 70 बीघा भूमि शामिल थी। इस श्रेणी में इस भूमि पर सरकारी अथवा अर्ध-सरकारी कार्यालय के अलावा कार्यालय ही स्थापित किये जा सकते हैं। इसके बावजूद नियमों को दरकिनार कर यहां कंस्ट्रिक्ट की इमारतें तैयार की गईं। बताते हैं कि 2031 की महायोजना में यही स्थिति यथावत है।

सिंडिकेट ने बताया नाला वो निकली नदी

पिरई नदी और सरायन नदी का संगम भी इसी शहर में होता है। बताते हैं कि जमीन खरीदने वालों को बताया गया था कि पिरई ही नहीं सरायन भी एक नाला है, जो शहर से होकर गुजरता है। डीएम द्वारा कलाई जा रही जांच में इस बिन्दु को मुख्य रूप में शामिल किया गया है।

एसआईआर की संवैधानिक वैधता को बरकरार रखने वाला फैसला हो रद्द

» सुप्रीमकोर्ट के पूर्व न्यायाधीश बोले- यह गैर-कानूनी, गैर-संवैधानिक और अलोकतांत्रिक

» 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

नयी दिल्ली। उच्चतम न्यायालय के पूर्व न्यायाधीश वी. गोपाल गौड़ा ने कहा कि निर्वाचन आयोग के विशेष गहन पुनरीक्षण (एसआईआर) की संवैधानिक वैधता को बरकरार रखने वाले शीर्ष अदालत के फैसले को रद्द किया जाना चाहिए, क्योंकि यह 'गैर-कानूनी, गैर-संवैधानिक और अलोकतांत्रिक' है। पूर्व न्यायाधीश ने यह भी कहा कि शीर्ष अदालत को निर्वाचन आयोग से सभी दस्तावेज मंगाने चाहिए ताकि यह स्पष्ट हो सके कि एसआईआर का निर्णय दोनों निर्वाचन आयुक्तों की सहमति और मंजूरी से लिया गया था या नहीं।



उनकी यह टिप्पणी उसी दिन आई, जब 42 सेवानिवृत्त न्यायाधीशों के एक समूह ने एसआईआर का बचाव करते हुए इसे 'कानूनी प्रक्रिया' बताया था। न्यायमूर्ति गौड़ा ने बेंगलुरु में कॉकरोच जनता पार्टी (कॉजपा) द्वारा मतदाता सूची पुनरीक्षण के दौरान मतदाताओं के नाम हटाए जाने के विरोध में आयोजित प्रदर्शन में कहा, "एसआईआर की संवैधानिक वैधता को सही ठहराने वाला उच्चतम न्यायालय का 27 मई का फैसला गैर-कानूनी और अलोकतांत्रिक है, जिसे तुरंत रद्द किया जाना चाहिए।" उच्चतम न्यायालय के मौजूदा न्यायाधीश उज्जल भुइया की हालिया टिप्पणी का समर्थन करते हुए न्यायमूर्ति गौड़ा ने कहा कि मतदाताओं को बड़े पैमाने पर मताधिकार से वंचित करने के खिलाफ आवाज उठाकर उन्होंने कोई न्यायिक मर्यादा नहीं तोड़ी है। न्यायमूर्ति भुइया ने रविवार को कहा था कि लाखों नागरिकों को मताधिकार से वंचित करने वाली कोई भी प्रक्रिया संवैधानिक व्यवस्था के खिलाफ है।

भारत और वेस्टइंडीज के बीच दूसरा टी20 मैच आज

» संजू सैमसन की जगह वैभव सूर्यवंशी को मिल सकता है मौका

» 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

रांची। भारत और वेस्टइंडीज के बीच पांच मैचों की टी20 सीरीज का दूसरा मुकाबला शुक्रवार को रांची के जेएससीए इंटरनेशनल क्रिकेट स्टेडियम में खेला जाएगा। सीरीज के पहले मैच में शानदार जीत दर्ज करने के बाद भारतीय टीम की नजर अब रांची में भी जीत हासिल कर बढ़त मजबूत करने पर होगी। टीम इंडिया ने जेएससीए अंतरराष्ट्रीय क्रिकेट स्टेडियम में अब तक चार टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच खेले हैं। इनमें भारत ने तीन मुकाबले जीते हैं, जबकि एक मैच में उसे हार का सामना करना पड़ा है। भारतीय टीम ने रांची में अपना पिछला टी20 मुकाबला 2023 में न्यूजीलैंड के खिलाफ खेला था। उस मैच में न्यूजीलैंड ने भारत को 21 रन से हराया था। वहीं संजू



गेंदबाजी संयोजन में बदलाव पर हो सकता है विचार

भारत अपनी तेज गेंदबाजी संयोजन में भी बदलाव पर विचार करेगा। लखनऊ में खेले गए पहले टी20 अंतरराष्ट्रीय मैच के पहले ओवर में ही मयंक यादव ने 16 रन लुटा दिए थे। वह बीच के ओवरों और अंतिम ओवरों में भी महंगे साबित हुए। भारत ऑलराउंडर नीतीश कुमार रेड्डी को टीम में शामिल करने और उन्हें नई गेंद से गेंदबाजी करवाने के बारे में सोच सकता है, हालांकि वह सीरीज के दौरान यह प्रयोग खास सफल नहीं रहा था। स्पिन विभाग की बात करें तो कुलदीप यादव के साथ अशर पटेल के जुड़ने से टीम को मजबूती मिली है। इन दोनों ने पहले मैच में दो-दो विकेट लिए थे। इसके अलावा युवा ऑलराउंडर नमन धीर का प्रदर्शन भी भारत के लिए सकारात्मक रहल है जिनल्लेने अपनी ऑफ स्पिन गेंदबाजी से 31 रन देकर तीन विकेट लिए थे।

24 फसलों पर एमएसपी का वादा, मंडी में न बाजरा बिक रहा न धान : अजय चौटाला

» जेजेपी नेता ने भाजपा सरकार को घेरा

» 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

भिवानी (हरियाणा)। जननायक जनता पार्टी (जेजेपी) के राष्ट्रीय अध्यक्ष डॉ. अजय चौटाला ने कहा कि सरकार 24 फसलों पर एमएसपी देने का वादा करती है लेकिन मंडियों में न बाजरा बिक रहा है और न धान। उन्होंने बढ़ते अपराध, खाद की किल्लत और खिलाड़ियों के मुद्दे पर भी सरकार को घेरा। डॉ. अजय चौटाला भिवानी में अपने परिचित पूर्व पार्षद भरपूर साईं के बेटे और लॉन टेनिस के नेशनल खिलाड़ी रोहित के निधन पर शोक जताने पहुंचे थे। इस दौरान उन्होंने कहा कि हरियाणा में सरकार है ही नहीं, फिलहाल सरकार सिंगापुर में है और आते ही पंजाब चली जाएगी।

उन्होंने कहा कि प्रदेश में लगातार



अपराध बढ़ रहा है और सरकार मूकदर्शक बनी हुई है। पूरे प्रदेश का किसान परेशान है और खाद की पर्ची थानों में मिल रही है। चुनाव आयोग पर उठ रहे सवालों पर उन्होंने कहा कि ईसी, ईडी, सीबीआई और आईटी सभी एजेंसियां सरकार की पैरोल पर काम कर रही हैं। उन्होंने आरोप लगाया कि भाजपा जनता को लूटकर कार्यालयों के नाम पर सेवन स्टार होटल बना रही है।

तानाशाही से मिलकर लड़ें डीएमके व आप

» 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क

मुंबई। मुख्य चुनाव आयुक्त ज्ञानेश कुमार के खिलाफ इंडिया गठबंधन के विरोध प्रदर्शन से आप और डीएमके के दूर रहने पर, शिवसेना (यूबीटी) ने इन दोनों पार्टियों से कांग्रेस के साथ अपने मतभेद भुलाकर तानाशाही के खिलाफ लड़ने की अपील की। सामना में छपे एक संपादकीय में पार्टी ने कहा कि पूरा देश स्पेशल इंटेंसिव रिविजन -एसआईआर के खिलाफ हो रहे विरोध प्रदर्शनों को देख रहा है। पार्टी ने कहा कि लेकिन आम आदमी पार्टी-आप और द्रविड़ मुनेत्र कड़मम (डीएमके) इससे दूर रहे हैं।

पार्टी ने कहा कि आप के कांग्रेस के साथ मतभेद हैं। उद्धव ठाकरे के नेतृत्व वाली पार्टी ने कहा कि लेकिन देश को तानाशाही की बेड़ियों से मुक्त कराने के लिए आप और कांग्रेस को कम से कम एक साथ आना



चाहिए। आप के कन्वीनर अरविंद केजरीवाल का प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी, केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह और चुनाव आयोग के साथ कड़वा अनुभव रहा है। जब केजरीवाल दिल्ली के मुख्यमंत्री थे, तो उन्हें एक झूठे मामले में जेल भेज दिया गया था। आरोप है कि उनके चुनाव क्षेत्र से वोटों के नाम हटाकर उनकी हार की साजिश रची गई थी।

» उद्धव ठाकरे ने दोनों पार्टियों से कहा - कांग्रेस के साथ आए

इसलिए, पार्टी का कहना है कि इंडिया गठबंधन से दूर रहना आपके हित में नहीं है। सेना (यूबीटी) ने कहा कि भले ही पंजाब विधानसभा चुनाव, जहाँ दोनों पार्टियाँ मुख्य प्रतिद्वंद्वी हैं, विवाद का विषय हो सकते हैं, फिर भी केजरीवाल को मोदी और शाह के खिलाफ लड़ाई में शामिल होना चाहिए। संपादकीय में कहा गया है कि तमिलनाडु में डीएमके हार गई और कांग्रेस की मदद से सी. जोसेफ विजय की टीवीके सत्ता में आई। इससे डीएमके नाराज हो गई। संपादकीय में आगे कहा गया, लेकिन डीएमके का यह रुख देशहित में नहीं है।

आंदोलन से घबराई एनडीए सरकार, पाबंदियों से विपक्ष पर प्रहार

» सड़क, रेल सभी जगह पुलिस ही पुलिस
» सुप्रीम कोर्ट पहुंचा दिल्ली में 57 मेट्रो स्टेशन बंद करने का मामला

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क
नई दिल्ली। कॉकरोच जनता पार्टी (सीजेपी) ने देश की राजधानी दिल्ली में 10 अक्टूबर को विरोध प्रदर्शन करने का एलान किया है। केन्द्र की एनडीए सरकार इस आंदोलन से घबरा गई



है। इसीलिए दिल्ली में शनिवार को होने वाले इस प्रोटेस्ट से पहले कई तरह की पाबंदियां लगा दी गई हैं। दिल्ली में अब तक 57 मेट्रो स्टेशन बंद कर दिए गए हैं। वहीं दिल्ली रेलवे स्टेशन की ओर आने

वाली ट्रेनों को रोक दिया गया है। इस बात को लेकर मामला सुप्रीम कोर्ट पहुंच गया है। सीनियर वकील और सांसद कपिल सिब्बल ने भारत के सूर्य कांत की अध्यक्षता वाली बेंच के सामने मेट्रो स्टेशनों को बंद

सीजेपी कार्यकर्ताओं को ट्रेन से उतारा मध्य प्रदेश के इटारसी रेलवे स्टेशन पर सीजेपी के कार्यकर्ताओं को ट्रेन से उतारे जाने के बाद जमकर हंगामा हुआ। सीजेपी के कार्यकर्ता 10 अक्टूबर को दिल्ली के जंतर-मंतर पर होने वाले विरोध-प्रदर्शन में शामिल होने के लिए गोवा एक्सप्रेस के जनरल कोच से दिल्ली जा रहे थे। इटारसी जंक्शन के प्लेटफॉर्म नंबर-1 पर ट्रेन पहुंचते ही पुलिस बल ने घेराबंदी कर करीब 1516 कार्यकर्ताओं को ट्रेन से नीचे उतार लिया, जिनमें 11 युवक और 5 युवतियां शामिल थीं।

केजरीवाल बोले- मैं भी जाऊंगा सीजेपी के जंतर-मंतर प्रोटेस्ट से पहले आप के राष्ट्रीय संयोजक अरविंद केजरीवाल का बड़ा बयान आया है। अरविंद केजरीवाल ने दावा किया है कि वह भी सीजेपी के प्रोटेस्ट में शामिल होंगे और उनका परिवार भी शामिल होगा। मैं देश के लोगों से अपील करता हूं कि जिस तरह से केन्द्र सरकार हमारे जनतंत्र के साथ खिलवाड़ कर रही है, भारी संख्या में लोगों के वोट काटे जा रहे हैं, जो बीजेपी को वोट नहीं देता उसके वोट काट देते हैं, फर्जी वोट एड कर देते हैं, ज्ञानेश कुमार का यह खेल खुलेआम किया।

करने और ट्रेनों को रद करने का मुद्दा उठाया और कोर्ट से दखल देने की अपील की। सिब्बल ने कोर्ट में कहा, सभी ट्रेनें रद कर

दी गई हैं, मेट्रो स्टेशन बंद हैं। आप कहें आ-जा नहीं सकते। मेरे देश का क्या हो रहा है?

नंदीग्राम-रेजीनगर और नगांव में भाजपा को बढ़त तमिलनाडु में टीवीक आगे, पुडुचेरी में कांग्रेस पिछड़ी

» देश के तीन राज्यों की पांच विधानसभा सीटों और असम की एक लोकसभा सीट पर उपचुनाव के लिए वोटों की गिनती जारी

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क
नई दिल्ली। देश के तीन राज्यों तमिलनाडु, पश्चिम बंगाल और पुडुचेरी की 5 विधानसभा सीटों पर हुए उपचुनावों तथा असम में हुए लोकसभा उपचुनाव की मतगणना जारी है। इन सीटों पर 6 अक्टूबर को मतदान हुआ था। तमिलनाडु की मदुरांतकम और धारापुरम विधानसभा सीटों पर मतगणना जारी है। पश्चिम बंगाल के पूर्व मेदिनीपुर जिले की नंदीग्राम और मुर्शिदाबाद जिले की रेजीनगर सीट पर मतगणना हो रही है। पुडुचेरी की थट्टनचावडी विधानसभा सीट और असम की नगांव लोकसभा सीट पर भी मतगणना चल रही है। असम की नगांव लोकसभा सीट के उपचुनाव में बीजेपीउम्मीदवार देवाशीष शर्मा को अब तक 165007 वोट मिले हैं, जबकि एआईडीयूफ के मोहम्मद बदरुद्दीन अजमल को 115456 वोट प्राप्त हुए हैं। कांग्रेस की सिबामनी बोरा 42735 वोटों के साथ काफी



पीछे तीसरे स्थान पर हैं। तमिलनाडु के मदुरांतकम में मरगथम कुमारवेल को सात राउंड्स के बाद 27460 वोट मिले हैं, डीएमके के परांथमेन 18668 वोट के साथ दूसरे स्थान पर हैं। वहीं, एआईडीएमके की एस.कनिथासंपथ 16201 वोट के साथ तीसरे नंबर पर है। धारापुरम में टीवीके की सत्यभामा 31327 वोटों के साथ आगे चल रही हैं, डीएमके की एस. सुकन्या को 25841 वोट प्राप्त हुए हैं। वहीं, एआईडीएमके की भानुमति 24363 वोटों के साथ तीसरे स्थान पर हैं। मुर्शिदाबाद जिले के रेजीनगर इलाके में भजपा के उम्मीदवार शंकर सरकार 28366 वोटों के साथ आगे चल रहे हैं। वहीं एजीयूपी के गुलाम नबी आजाद को 8109 वोट मिले हैं। कांग्रेस के अब्दुल्लाहिल काफ़ी 1705 वोटों के साथ तीसरे स्थान पर हैं। हसीरानी

रथ को अबतक 43655 वोट मिले हैं और वह 31943 वोटों से आगे चल रही हैं। कांग्रेस उम्मीदवार मिलन प्रधान 11712 वोटों के साथ दूसरे स्थान पर हैं। पुडुचेरी की थट्टनचावडी विधानसभा सीट पर हुए चुनाव में एनडीए के उम्मीदवार अशोक आनंद ने 8482 वोटों से शानदार जीत दर्ज की है। इस मुकामले में अशोक आनंद को कुल 13358 वोट मिले, जबकि कांग्रेस के ई. विनायगम को केवल 4876 वोट प्राप्त हुए। असम की नगांव लोकसभा सीट पर भाजपा के देवाशीष शर्मा 151709 वोटों के साथ सबसे आगे चल रहे हैं। वहीं, फिलहाल दूसरे नंबर पर एआईडीयूएफ के मोहम्मद बदरुद्दीन अजमल हैं, जिन्हें अभीतक 96673 वोट प्राप्त हुए हैं। कांग्रेस उम्मीदवार शिबमोनी बोरा 26000 वोट के साथ तीसरे स्थान पर हैं।

प्रदर्शनकारियों पर पुलिसिया सख्ती की मांग खारिज



» सुप्रीम कोर्ट ने कहा- देखना होगा छात्रों का भविष्य

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क
नई दिल्ली। सुप्रीम कोर्ट में एक याचिका दायर की गई थी, जिसमें अदालत से मांग की गई थी कि दिल्ली पुलिस को प्रदर्शनकारियों से निपटने के लिए पूरी छूट दी जाए। याचिका में पुलिस को प्रदर्शनकारियों के खिलाफ कार्रवाई करने के मामले में स्वतंत्रता देने की मांग की गई थी। हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने इस मांग को स्वीकार नहीं किया और याचिका खारिज कर दी। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत की अगुवाई वाली पीठ ने कहा कि प्रदर्शन करने वालों में कई युवा छात्र हैं। शीर्ष अदालत को उनके भविष्य के

साथ-साथ उनके परिवारों के बारे में भी सोचना होगा। पीठ ने स्पष्ट किया कि किसी भी मामले पर विचार करते समय यह ध्यान रखना जरूरी है कि युवा प्रदर्शनकारियों की जिंदगी और उनके भविष्य पर कानूनी कार्रवाई का क्या असर पड़ सकता है। मुख्य न्यायाधीश सूर्यकांत ने कहा, ये युवा छात्र और प्रदर्शनकारी हैं, जो हमारे सामने हैं। हमें उनके माता-पिता और इस बात का ध्यान रखना होगा कि उनका जीवन अभी लंबा है। उन्हें अदालतों की सुनवाई आदि में उलझना नहीं चाहिए। हालांकि, सुप्रीम कोर्ट ने साफ किया कि आदतन अपराधी बताए जा रहे लोगों और गंभीर अपराधों के आरोपियों को उसके पहले के आदेशों के तहत मिली सुरक्षा का लाभ नहीं मिलेगा।

विजयन और उनकी बेटी को हाईकोर्ट से झटका

» सीएमआरएल और एक्सलॉजिक लेन-देन मामले में एफआईआर के आदेश

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क
कोचीन। केरल हाई कोर्ट ने कोचीन मिनरल्स एंड रूटाइल लिमिटेड (सीएमआरएल) और वीना की कंपनी, एक्सलॉजिक सॉल्यूशंस प्राइवेट लिमिटेड के बीच हुए लेन-देन के मामले में केरल के पूर्व मुख्यमंत्री पिनाराय विजयन, उनकी बेटी टी. वीना और उनके पति (एमएलएऔर पूर्व मंत्री) पी.ए. मोहम्मद रियास के खिलाफ एफआईआर दर्ज करने और प्रिवेंशन ऑफ करप्शन एक्ट के तहत जांच करने का आदेश दिया है। जस्टिस ए. बदरुद्दीन ने वकील के.एम. शाहजहाँ की याचिका पर यह आदेश दिया। याचिकाकर्ता ने प्रवर्तन निदेशालय (श्रद्ध)



से मिली जानकारी के आधार पर केस दर्ज करने के बजाय राज्य पुलिस द्वारा शुरुआती जांच करने के फैसले को चुनौती दी थी। कोर्ट का यह आदेश इस मामले में एक अहम मोड़ है। यह मामला छद्मद्वारा वीना की कंपनी को किए गए पेमेंट से जुड़े आरोपों पर आधारित है। इन आरोपों की अभी पुष्टि नहीं हुई है, और आदेशित जांच से यह पता चलने की उम्मीद है कि क्या इन लेन-देन से लागू कानूनों के तहत कोई अपराध बनता है।

गुजरात के कच्छ में भयानक हादसा, कार बोलेरो की टक्कर में सात मजदूरों की मौत

□□□ 4पीएम न्यूज़ नेटवर्क
गांधीनगर। गुजरात के कच्छ से एक भयानक हादसे की खबर सामने आई है, यहां कार और बोलरो की टक्कर में 7 मजदूरों की मौत हो गई। मिली जानकारी के अनुसार हादसा खवाड़ा आरई पार्क में हुआ। जिसमें 7 मजदूरों की मौत हो गई। कच्छ के खवाड़ा के पास आरी पार्क जाते समय भोर में एक गंभीर दुर्घटना हुई। बताया गया कि एक काली कार ने मजदूरों को ले जा रही बोलेरो को टक्कर मार दी, जिससे यह हादसा हुआ। शुरुआती जानकारी के अनुसार, इस हादसे में 7 मजदूरों की मौत हो गई है। शुरुआती अनुमानों के मुताबिक बोलेरो में 15 से अधिक मजदूर सवार थे। जानकारी के अनुसार, इस हादसे में अन्य लोग भी



घायल हुए हैं। हादसे के बाद घटनास्थल पर अफरा-तफरी मच गई। इस हादसे से पूरे इलाके में मातम छाया हुआ है। शवों को पोस्टमार्टम के लिए खवाड़ा से भुज ले

जाने की प्रक्रिया शुरू कर दी गई है, पता चला है कि आरई पार्क इलाके में इस तरह का यह पहला बड़ा हादसा है, पुलिस ने हादसे की आगे की जांच शुरू कर दी है।